Topic 102315 (1) Date (1)

HINDI PC-1 LANGUAGE PROFICIENCY

भाषा

परिभाषा – 'भाषा' सार्थक ध्वनियों का ऐसा साधन है जिसके माध्यम से हम अपने विचार अथवा भाव दूसरों के सामने प्रकट कर सकते है और दूसरों के विचारों अथवा भावों को भली भाँति समझ सकते है।

विश्व मे अपने-अपने देश की भाषाये बोली जाती है। इनमें अंग्रेजी, चीनी, हिन्दी, जापानी, रूसी जर्मन, स्पेनिश, फ्रांसीसी, पुर्तगाली और अरबी आदि भाषाये प्रमुख है। इन प्रमुख भाषाओं को विश्व के दो-तिहाई लोग बोलते है। हिन्दी भाषा का इनमे ~~तीसरा~~ तीसरा स्थान है

भारतीय भाषाये → भारत के संविधान की आठवी सूची मे हिन्दी, गुजराती, पंजाबी, ——— मराठी, उड़िया, तमिल, बांग्ला, कश्मीरी असमिया, उर्दू, कन्नड, संस्कृत, मलयालम, सिन्धी, मणिपुरी, कोंकणी मैथिली, बोडो, संथाली, डोगरी और नेपाली आदि बाईस भाषाओं को राष्ट्रिय भाषाओं के रूप मे स्वीकार ~~किया~~ कर लिया गया है

भारतीय संविधान सभा ने 'हिन्दी' को 14 सितम्बर, 1949 ई० को संघ की राजभाषा स्वीकारा।

भारतीय संविधान के अनुच्छेद 343 के अनुसार हिन्दी हमारी राष्ट्रभाषा है। इसके बोलने वालो की संख्या सबसे अधिक है यह सब प्रकार से समृध्द भाषा है।

भाषा के प्रकार–

भाषा के निम्नलिखित दो प्रकार है

1- कथित भाषा
2- लिखित भाषा

1- कथित भाषा–

जब हम बातचीत के माध्यम से अपने विचार या भाव प्रकट करते है तो वह 'कथित भाषा' कहलाती है। यह कथित भाषा परिवर्तन शील होती है। इसमे हम ध्वनियों को प्रयोग करते है।

UNITED REGULAR SOCIETY

Impression Designer Sheet

Teacher's Signature

Scanned with CamScanner

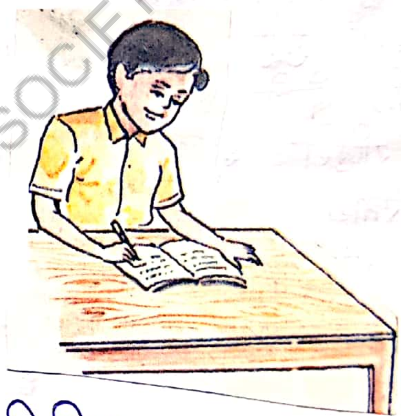

लिखित भाषा

UNITED SECULAR SOCIETY

Scanned with CamScanner

लिखित भाषा – जब हम लिखकर अपने विचार अथवा भाव प्रकट करते है, तो वह लिखित भाषा कहलाती है। यह लिखित भाषा अपरिवर्तनशील है इसमे हम 'ध्वनि चिन्हो' का प्रयोग होती है इसमे हम 'ध्वनि चिन्हो का प्रयोग करते है जो 'वर्ण' अथवा 'वर्ण समूह' कहलाता है। इसी भाषा के माध्यम से हमारा 'साहित्य' सुरक्षित है। इस कारण भाषा का महत्व अधिक माना गया है।

भाषा की इकाइयाँ

भाषा की निम्नलिखित पाँच इकाइयाँ मानी जाती है।

1. ध्वनि, 2. वर्ण 3. शब्द 4. पद 5. वाक्य

1. ध्वनि – मानव मुख से निकलने वाली प्रत्येक स्वतन्त्र आवाज को 'ध्वनि' कह सकते है। काथिल भाषा मे केवल इन्ही ध्वनियो का प्रयोग किया जाता है।

2. वर्ण – वह मूल 'ध्वनि' जिसके अन्य खण्ड न हो सकें, उसे 'वर्ण' कहते है। जैसे – अ, आ, इ, ई, उ, ऊ, क, च, ट, त, य, श, ह, आदि।

3. शब्द – वर्णो के सार्थक समूह को 'शब्द' कहते है।

जैसे – क + म + ल = कमल

4. पद – जब शब्द वाक्य मे प्रयुक्त होने लग जाता है तब उसे 'पद' कहते है। श्री राम ने 'रावण का' 'वध' किया। इस वाक्य मे श्री राम ने 'रावण का' 'वध' 'किया' पद है। इस प्रकार, वाक्य मे प्रयुक्त शब्द के व्यवहारिक रूपो को 'पद' की संज्ञा दी जाती है।

5. वाक्य – शब्द समूह का वह सार्थक विन्यांश जिससे अर्थ एवं भाव की पूर्ण व सुस्पष्ट अभिव्यक्ति होती है, उसे वाक्य कहते है। जैसे – पुलकित ने रामायण पढ़ी इस वाक्य मे 'पुलकित ने' 'रामायण' 'पढ़ी' पृथक-पृथक शब्द है, किन्तु इनके सार्थक विन्यास से एक अर्थ निकल रहा है।

UNITED SECULAR SOCIETY

(४)

पढ़कर

हँसकर

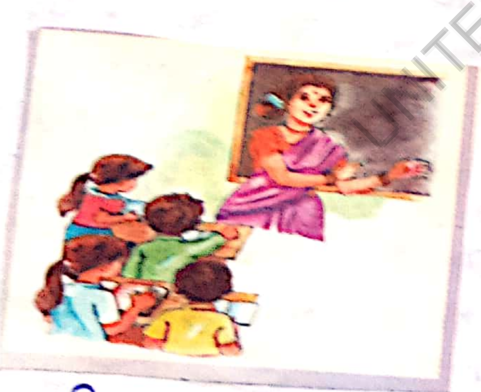

सिखकर

UNITED SECULAR SOCIETY

Scanned with CamScanner

5

हिन्दी भाषा का महत्व और विशेषताएँ

विश्व में सर्वाधिक बोली जाने वाली भाषाओं में हिन्दी हिन्दी तीसरे स्थान पर आती है। यह सहज, सरल और सुबोध होने के कारण इस उच्च स्थान पर पहुँची है। इसका व्याकरण भी काफी सरल है। इसी कारण यह यह जनप्रिय भाषा बन गई है। इसकी महत्ता इसी से स्पष्ट हो जाती है कि इसमें 254 से अधिक दैनिक समाचार पत्र-पत्रिकाएँ 2889 से अधिक साप्ताहिक, पाक्षिक और मासिक पत्र-पत्रिकाएँ पूर्ण साज सज्जा के साथ प्रकाशित होती है। इनकी कई पत्र-पत्रिकाएँ तो लाखो की संख्या मे प्रकाशित होती है। ज्ञान-विज्ञान, धर्म, राजनीति और अन्य विषयों की असंख्य पुस्तके आज हिन्दी मे उपलब्ध है। इसके विकास मे हिन्दी भाषा एवं अहिन्दी भाषी लेखकों कवियों साहित्यकारों नेताओ और समाज सुधारको का पूर्ण समर्थन मिला है। इन्ही सभी विशेषताओ के कारण हिन्दी की गणना विश्व की श्रेष्ठ भाषाओं में की जाती है।

वर्ण

प्रत्येक भाषा मे ध्वनियों को लिखने के लिए कुछ चिह्न निश्चित कर लिये जाते है प्रत्येक ध्वनि के लिए पृथक चिह्न होता है। इन्ही चिह्नो को वर्ण कहा जाता है।

वर्णों को लिखने के ढंग को लिपि कहते है। हिन्दी तथा संस्कृत भाषाएँ देवनागरी लिपि मे लिखी जाती है। अंग्रेजी भाषा रोमन लिपि मे लिखी जाती है।

किसी भाषा के समस्त समूह को उस भाषा की वर्ण माला कहते है।

वर्णों के प्रकार–

हिन्दी में वर्ण दो प्रकार के होते है– स्वर और व्यंजन

Impression Designer Sheet

Teacher's Signature

UNITED SECULAR SOCIETY

Scanned with CamScanner

1- स्वर

जो वर्ण किसी अन्य ध्वनी की सहायता के बिना बोले जाते है, उन्हे स्वर कहते है।

हिन्दी मे स्वर- वर्ण इस प्रकार है - अ, आ, इ, ई, उ, ऊ, ऋ, ए, ऐ, ओ, औ।

हिंदी में 'ऋ' का उच्चारण भी 'रि' की तरह होता है, इसी यह शुद्ध स्वर नहीं रह गया है। केवल संस्कृत शब्दो मे इसका उच्चारण पाया जाता है।

स्वर के भेद-

निम्नलिखित दो आधारों पर स्वरों के भेद किये जाते है-

उच्चारण मे अनुमानसिकता

उच्चारण में लगने वाला समय

1- अननुनासिक स्वर- जिन स्वरो का उच्चारण केवल मुख्य मुख्य होता है, उन्हे अननुनासिक स्वर कहते है।

अननुनासिक स्वर इस प्रकार है- अ, आ, इ, ई, उ, ऊ, ऋ, ए, ऐ, ओ, औ।

अनुनासिक स्वर- जिन स्वरो का उच्चारण केवल मुख नाक के दोनो से होता है उन्हे अनुनासिक स्वर कहते है। अनुनासिक स्वर इस प्रकार है- अँ, आँ, इँ, ईं, उँ, ऊँ, एँ, ऐं, ओं, औं।

उच्चारण मे लगने वाले समय के अनुसार स्वर के दो भेद होते है- ह्रास्य स्वर और दीर्घ स्वर।

ह्रस्व स्वर- जिस स्वर को उच्चारण मे कम समय लगता है, उसे ह्रस्व स्वर कहते है।

जैसे- अ, इ, उ तथा ऋ।

दीर्घ स्वर- जिस स्वर के उच्चारण मे का ह्रस्व स्वर से अधिक समय लगाता है, उसे दीर्घ स्वर कहते है।

जैसे- आ, ई, ऊ, ऐ, ओ, औ।

UNITED SECULAR SOCIETY

Impression Designer Sheet

Teacher's Signature

Scanned with CamScanner

२. व्यंजन

जिन वर्णों के उच्चारण मे स्वरों की सहायता ली जाती है, वे 'व्यंजन' कहलाते हैं। हिन्दी मे तैंतीस व्यंजन होते हैं जैसे- 'क' से 'ह' तक।

व्यंजन के भेद

१. स्पर्श
२. अन्तःस्थ
३. उस्म

स्पर्श— इस व्यंजन के 'क' से लेकर 'म' तक पाँच वर्ग है। प्रत्येक वर्ग मे पाँच व्यंजन है। प्रत्येक वर्ग का नाम प्रथम वर्ग के अनुसार रखा गया है जैसे—

क वर्ग	क	ख	ग	घ	ङ
च वर्ग	च	छ	ज	झ	ञ
ट वर्ग	ट	ठ	ड	ढ	ण
त वर्ग	त	थ	द	ध	न
प वर्ग	प	फ	ब	भ	म

२. अन्तःस्थ — ये निम्नलिखित चार है—

श, ष, स, ह,

मात्राये

व्यंजन वर्णो के साथ लिखने के लिए स्वर वर्णों के जिन चिन्हे का प्रयोग किया जाता है, वे 'मात्राये' कहलाती है।

'अ' स्वर की कोई मात्रा नही होती है।

'अं' और 'अः' वर्ण 'अयोगवाह' है इन दोनों वर्णो का प्रयोग अन्य स्वरो के समान व्यंजनो के साथ किया जाता है।

UNITED SECULAR SOCIETY

Impression Designer Sheet

Teacher's Signature

Scanned with CamScanner

हिन्दी में विभिन्न स्वरों की मात्राएँ निम्न प्रकार हैं।

स्वर	मात्रा का रूप	मात्रा सहित व्यंजन
अ	—	क
आ	ा	का
इ	ि	कि
ई	ी	की
उ	ु	कु
ऊ	ू	कू
ऋ	ृ	कृ
ए	े	के
ऐ	ै	कै
ओ	ो	को
औ	ौ	कौ

इस प्रकार व्यंजनों पर मात्राएँ चार प्रकार से लगायी जाती है।

1. आगे लगनेवाली मात्राएँ – आ, ई, ओ, औ।
2. पहले लगनेवाली मात्रायें – इ।
3. ऊपर लगनेवाली मात्रायें – ए, ऐ।
4. नीचे लगने वाली मात्राएँ – उ, ऊ, ऋ।

संयुक्त व्यंजन में 'इ' की मात्रा – यदि संयुक्त व्यंजन में 'इ' की मात्रा लगानी हो तो उसे संयुक्त व्यंजन से पूर्व लगाते हैं। जैसे – रस्सियाँ, मक्खियाँ, तख्तियाँ आदि। इन शब्दो में 'इ' की मात्रा क्रमशः 'स' 'ख' 'त' तथा 'त' पर नही।

'र' पर 'उ' तथा 'ऊ' की मात्राएँ – 'र' पर 'उ' तथा 'ऊ' की मात्राएँ लगाते समय अधिक सावधानी की आवश्यकता होती है क्योंकि प्रायः अधिकतर लोग इस मात्रा में कोई भेद नहीं पाते इन मात्राओं के भेद को समझने के लिए निम्नलिखित शब्दो को देखे –

र + उ = रु – रुपया, रुचि, रुई, रुकना आदि
र + ऊ रूखा, रूठना आदि।

UNITED SECULAR SOCIETY

आंख

ईश्वर

वस्त्र

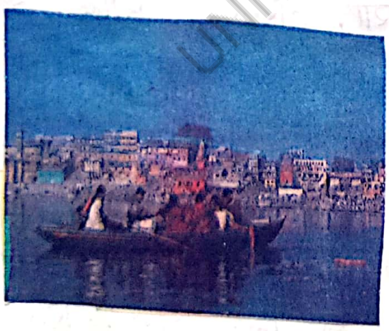

गंगा

UNITED SECULAR SOCIETY

पर्यायवाची शब्द

समान अर्थ प्रकट करने वाले शब्दों को पर्यायवाची या समानार्थी शब्द कहते हैं। सभी भाषाओं में इस प्रकार के शब्द मिलते हैं। हिन्दी भाषा को संस्कृत से विपुल शब्द-भंडार मिला है, अतः इसमें एक अर्थ को प्रकट करने वाले अनेक शब्द मिलते हैं। उदाहरणार्थ - मेघ, जलद, तोयद, अम्बुज आदि शब्द बादल के अर्थ में प्रयुक्त होते हैं। ये सभी शब्द बादल के पर्यायवाची शब्द हैं।

हिन्दी भाषा में प्रयुक्त होने वाले प्रमुख पर्यायवाची शब्द निम्नलिखित हैं -

अचरज - अचम्भा, आश्चर्य, कुतूहल, कौतुक, विस्मय।
अचानक - अकस्मात्, सहसा, औचक, एकाएक, संयोगवश।
अग्नि - आग, अनल, पावक, वह्नि, हुताशन, दहन।
आँख - नेत्र, लोचन, नयन, चक्षु, अक्षि, दृग।
आँसू - अश्रु, नयनजल, नयनाम्बु, नेत्रजल, आँसुआ, दृगजल
आकाश - नभ, गगन, अम्बर, व्योम, द्यौ, अन्तरिक्ष।
इच्छा - अभिलाषा, कामना, चाह, एषणा, लालसा, ~~आकाश~~ आकांक्षा।
इन्द्र - देवेन्द्र, देवेश, देवाधिपति, पुरन्दर, सुरेश, शक्र।
ईश्वर - जगदीश, नारायण, भगवान, दीनानाथ, प्रभु, परमपिता।
उन्नति - उदय, उत्थान, अभ्युदय, प्रगति, उत्कर्ष, वृद्धि।
उपाय - चेष्टा, यत्न, युक्ति, तरीका, विधि, उद्योग।
कमल - नीरज, जलज, पद्म, सरोज, पंकज, अरविन्द।
कपड़ा - वस्त्र, चीर, बसन, दुकूल, पट, अम्बर।
खून - रुधिर, रक्त, लहू, शोणित, प्राणद, लोहू।
चन्द्रमा - इन्दु, शशि, निशाकर, रजनीश, सोम, विधु, राकेश।
गंगा - जाह्नवी, भागीरथी, सुरसरि, देवापगा, मन्दाकिनी।
जल - वारि, अम्बु, तोय, नीर, पानी, उदक, जीवन, सलिल।
झण्डा - ध्वज, पताका, निशान, केतु, ध्वजा, केतन,
तालाब - ताल, सर, सरोवर, तडाग, जलाशय, पोखर

Impression Designer Sheet

Teacher's Signature

Scanned with CamScanner

3

ड़की

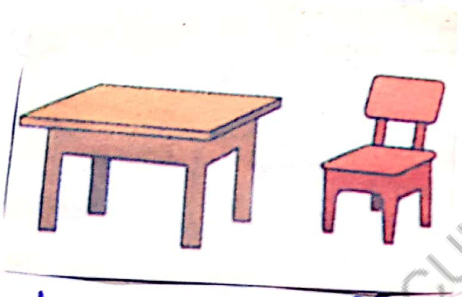

मेज कुर्सी

घोड़ा

किताब

UNITED SECULAR SOCIETY

Scanned with CamScanner

शब्द-विचार

किसी भाषा मे जितने शब्द प्रयुक्त होते है, उन शब्दों के समुच्चय को उस भाषा का शब्द-भंडार कहते है कि हिन्दी भाषा का शब्द-भंडार बहुत विशाल है। हिन्दी भाषा मे अधिकतर शब्द संस्कृत से आये है। इनमें से कुछ शब्द अपने मूल रूप मे ही प्रयुक्त होते है और कुछ शब्दो का स्वरूप परिवर्तन हो गया है। हिन्दी भाषा मे कुछ शब्द, विदेशी भाषाओं से भी आये है। कुछ शब्द ऐसे भी है, जो न तो संस्कृत से आये है और न विदेशी भाषाओं से। इनका विकास यही पर हुआ है। इस प्रकार स्रोत के आधार पर हिन्दी के शब्द-भण्डार मे चार प्रकार शब्द मिलते है – तत्सम, तद्भव, विदेशी और देशज शब्द।

तत्सम शब्द– हिन्दी मे संस्कृत से आये हुये वे शब्द, जो अपने मूल स्वरूप मे ही प्रयोग किये जाते है, तत्सम शब्द कहलाते है। जैसे– अधीन, अंकुर, उत्थान, ईर्ष्या। हिन्दी भाषा मे प्रयोग होने वाले कुछ तत्सम शब्द इस प्रकार है–

अन्धकार	अक्षर	अधीन	अजेय
अंकुर	अद्वितीय	अमृत	अपमान
अपेक्षा	अभीष्ट	अमूर्त	अम्बुज
अर्द्ध	अश्रु	ईर्ष्या	उच्च

तद्भव शब्द– तद्भव शब्द उन शब्दो को कहा जाता है जो संस्कृत से हिन्दी मे आये तो है, पर अपने मूल स्वरूप मे प्रयोग नही होते। उनका स्वरूप थोडा बदल गया है जैसे आग (अग्नि), दूध (दुग्ध), आदि।

तद्भव	तत्सम
अंधेरा	अन्धकार
अंगूठा	अंगुष्ठ

UNITED SECULAR SOCIETY

Scanned with CamScanner

16

राम खाता है श्याम रोता है

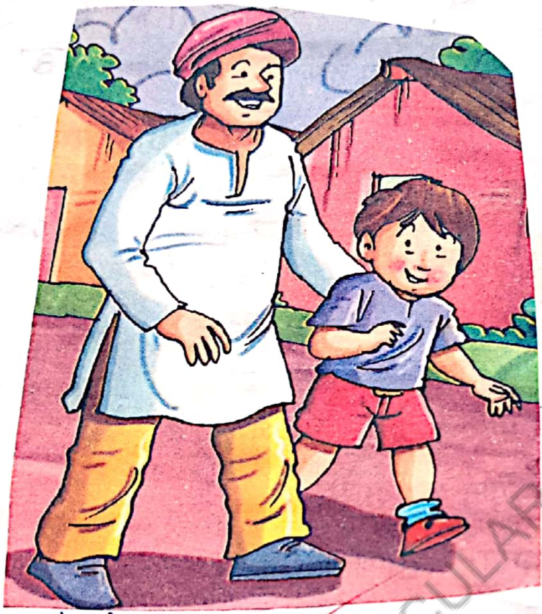

सोहन खाता है सोहन जाता

सीमा हसती है

सीता रोती है

UNITED SECULAR SOCIETY

Scanned with CamScanner

Topic Date 17

विलोम शब्द

जो शब्द किसी शब्द के ठीक उल्टे अर्थ का ~~बोध~~ बोध कराते हैं, उन्हें विलोम या विपरीतार्थक शब्द कहते हैं। जैसे 'अच्छा' का विलोम शब्द 'बुरा' होगा। किसी शब्द का विलोम शब्द लिखते समय इस बात का ध्यान रखना चाहिए कि जहाँ तक सम्भव हो, तत्सम शब्द के लिए तत्सम और तद्भव शब्द के लिए तत्सम शब्द के लिखा जाए। उदाहरणार्थ 'नवीन' शब्द लिए ~~तद्भव शब्द लिखा जाए~~। का विलोम 'प्राचीन' तथा 'नया' शब्द का विलोम 'पुराना' लिखना चाहिए।

शब्द	विलोम
अन्धकार	प्रकाश
आचार	अनाचार
ईमानदार	बेईमान
उत्थान	पतन
ऊँच	नीच
एकता	अनेकता
कड़ुवा	मीठा
गुरु	लघु
घृणा	प्रेम
चतुर	मूर्ख
जन्म	मृत्यु
तरल	ठोस
थोड़ा	ज्यादा
दरिद्र	~~निर्धन~~ धनी
धनी	निर्धन
निर्गुण	सगुण
पाप	पुण्य

UNITED SECULAR SOCIETY

Scanned with CamScanner

19

शब्द - रचना

रचना की दृष्टि से हिन्दी भाषा मे तीन प्रकार के शब्द पाये जाते है - रूढ, यौगिक और योगरूढ ।

रूढ शब्द — जिन शब्दों के सार्थक खण्ड नही किये जा सकते हैं, इन्हें रूढ शब्द कहते है । जैसे — तोता, भेड, नाक आदि । यदि इन शब्दों के खण्ड किये जाएँ, तो वें निम्नलिखित ढंग से बनेंगे —

तोता — तो + ता और त + ओता
भेड — भे + ड और भ + एड

उपर्युक्त शब्दों के खण्डो को देखने से पता चलता है कि ये खण्ड कोई अर्थ नही रखते, किन्तु परस्पर मिलकर सार्थक शब्द का निर्माण करते हैं। इन शब्दो मूल शब्द या अयौगिक शब्द भी कहते हैं।

यौगिक शब्द —

यौगिक शब्द का अर्थ है जुडा हुआ । जब किसी रूढ शब्द मे किसी अन्य सार्थक शब्द या शब्द खण्ड का योग हो जाता है तो इस प्रकार बना शब्द यौगिक शब्द कहलाता है । जैसे—

विद्या + आलय = विद्यालय
सेना + पति = सेनापति
अनु + करण = अनुकरण
भाग्य + वान = भाग्यवान

योगरूढ शब्द —

जिन शब्दों की रचना यौगिक शब्दो की ~~योगरूढ~~ तरह होती हैं किन्तु वे विशिष्ट या रूढ अर्थ मे प्रयोग किये जाते हैं उन्हे योगरूढ शब्द कहते है। जैसे चारपाई । इस शब्द का अर्थ 'चार पैरे वाली हर वस्तु के लिए हम 'चारपाई' शब्द का प्रयोग नही कर सकते । इस शब्द का अपना रूढ अर्थ है ।

Impression Designer Sheet
Teacher's Signature
Scanned with CamScanner

सन्धि

सन्धि का अर्थ है मेल अथवा प्रयोग योग्य। भाषा में दो वर्णों के मेल को सन्धि कहते है। जब दो शब्दों के बीच सन्धि होती है तो पहले शब्द के अन्तिम वर्ण का दूसरे शब्द के प्रथम वर्ण से मेल हो जाता है। जैसे - विद्या + आलय - विद्यालय जहाँ 'विद्या' शब्द का अन्तिम वर्ण 'आ' है दोनों का संयोग होकर 'आ' बना - आ + आ = आ।

सन्धि का निम्नलिखित तीन प्रकार की होती है।

स्वर सन्धि → जब परस्पर मिलने वाले दो शब्दों में से पहले शब्द के अन्त मे और दूसरे शब्द के आरम्भ मे स्वर होते है तो उन स्वरो का मेल हो जाता है उसे स्वर सन्धि कहते है।

व्यंजन सन्धि → जब परस्पर मिलने वाले दो शब्दो से पहले शब्द के अन्त मे कोई व्यंजन और दूसरे शब्द के आरम्भ में कोई स्वर या व्यंजन हो तो उनके बीच होने वाले मेल को व्यंजन सन्धि कहते है।

विसर्ग सन्धि → जब परस्पर संयुक्त होने वाले दोनो शब्दो मे से पहले शब्द के अन्त मे विसर्ग (:) और दूसरे शब्द आरम्भ मे स्वर या व्यंजन कोई भी हो तो उन दोनों के बीच होने वाले मेल को विसर्ग सन्धि कहते है।

स्वर सन्धि के भेद

स्वर सन्धि के निम्नलिखित पाँच भेद होते है:-

1. दीर्घ सन्धि
2. यण सन्धि
3. गुण सन्धि
4. वृद्धि सन्धि
5. अयादि सन्धि

दीर्घ सन्धि →

यदि ह्रस्व या दीर्घ अ, इ, उ, ऋ के आगे वही ह्रस्व या दीर्घ स्वर आये तो के स्थान पर दीर्घ स्वर हो जाता है।

UNITED SECULAR SOCIETY

सत्य + अर्थी = सत्यार्थी (अ + अ = आ)
परम + आत्मा = परमात्मा (अ + आ = आ)
विद्या + अध्ययन = विद्याध्ययन (आ + अ = आ)
रवि + इन्द्र = रवीन्द्र (इ + इ = ई)

2. यण संधि –
यदि ह्रस्व या दीर्घ इ, उ, ऋ के आगे कोई असमान स्वर आए तो ई का य् उ ऊ का व और ऋ का र हो जाता है। जैसे –
~~(इ + य = य)~~
यदि + अपि = यद्यपि (इ + अ = य)
इति + आदि = इत्यादि (इ + आ = या)
प्रति + उत्तर = प्रत्युत्तर (इ + उ = यु)

3. गुण संधि – अ या आ के आगे यदि इ या ई आए तो दोनों के स्थान पर ए, यदि उ या ऊ आए तो दोनों के स्थान पर ओ तथा ऋ आएँ तो दोनों के स्थान पर अर हो जाता है। जैसे –
स्व + इच्छा = स्वेच्छा (अ + इ = ए)
महा + ईश = महेश (आ + ई = ए)
परम + ईश्वर = परमेश्वर (अ + ई = ए)

4. वृद्धि संधि – यदि अ या आ के आगे ए या ऐ आए तो दोनों के स्थान पर ऐ ओ या औ आए तो दोनों के स्थान पर औ हो जाता है। जैसे –
एक + एक = एकैक (अ + ए = ऐ)
मत + ऐक्य = मतैक्य (अ + ऐ = ऐ)
तथा + एव = तथैव (आ + ए = ऐ)

5- अयादि संधि – यदि ए, ऐ, ओ, औ के आगे कोई असमान स्वर आए तो क्रमशः अय्, आय् अव्, आव् हो जाता है। जैसे
ने + अन = नयन

UNITED SECULAR SOCIETY

Scanned with CamScanner

Topic 25 Date

व्यंजन सन्धि

1. यदि विभिन्न वर्गों के प्रथम् व्यंजन के पश्चात् कोई स्वर आए तो वह अपने वर्ग के तीसरे व्यंजन में परिवर्तित हो जाता है। जैसे–

दिक् + अम्बर = दिगम्बर
षट + आनन = षडानन

2. यदि विभिन्न वर्गों के प्रथम व्यंजन के पश्चात् किसी वर्ग का तीसरा या चौथा या अन्तःस्थ कोई एक व्यंज[न] आया हो तो वह अपने वर्ग के तीसरे व्यंजन मे परिवर्तित हो जाता है। जैसे–

दिक् + गज = दिग्गज
वाक् + जाल = वाग्जाल

3. यदि किसी शब्द के अन्त मे त् आया हो और उसके पश्चात् च या छ आया हो तो त् च मे परि[वर्तित] हो जाता है। जैसे–

सत् + चरित्र = सच्चरित्र
जगत् + छवि = जगच्छवि

4. यदि स से पूर्व त् का प्रयोग हुआ हो तो वह ज्यों का त्यों रहता है। जैसे–

सत + साहस = सत्साहस
उत + सर्ग = उत्सर्ग

5. यदि प्रथम शब्द के अन्त में क्, ट या त् आ[या] हो और इनके पश्चात् आनेवाले दूसरे शब्दों [के] आरम्भ में म, न हो तो क्, ट और त् को [उसी वर्ग के] पंचम वर्ण मे बदल देते हैं। जैसे–

वाक् + मय = वाङ्मय
सत् + मार्ग = सन्मार्ग

UNITED SECULAR SOCIETY

Scanned with CamScanner

6. यदि त [illegible] के बाद ज और ल आए [illegible] त् क्रमशः [illegible] ज [illegible] ल + [illegible]ज्वल = उज्ज्वल में परिवर्तित हो जाता है जैसे
उत् + [illegible]ज्वल = उज्ज्वल
सत + जन = सज्जन

7. यदि सघोष के पश्चात् अघोष व्यजंन हो तो सघोष का अघोस हो जाता है।
सद + कार = सत्कार
उद् + साह = उत्साह

8. इ या उ के बाद आने वाले स का ष हो जाता है जैसे–
अनु + संगी = अनुषंगी
वि + सम = विषम

विसर्ग सन्धि

1. यदि विसर्ग के पश्चात च, छ श आए तो विसर्ग श में परिवर्तित हो जाता है जैसे–
नि + चल = निश्चल
दु: + शासन = दुश्शासन

2. सघोष व्यजंन से पहले आए हुए विसर्ग (:) का का ओ हो जाता है। जैसे–
तम + गुण = तमोगुण
मन + योग = ~~पुनरुद्धार~~ मनोयोग

3. यदि पुन: या अन्त: के पश्चात् सघोष व्यजंन आया तो विसर्ग का र हो जाता है जैसे–
पुन + मिलन = पुनर्मिलन
पुन + उद्धार = पुनरुद्धार

4. यदि विसर्ग के पश्चात त या स आये हो विसर्ग स मे परिवर्तित हो जाता है। जैसे-
नि: + तेज = निस्तेज
मन + ताप = मनस्ताप

UNITED SECULAR SOCIETY

Scanned with CamScanner

5. यदि विसर्ग के पश्चात् ट, ठ या क आया है तो विसर्ग ष में परिवर्तित हो जाता है जैसे-
धनुः + टंकार = धनुष्टंकार
निः + कंटक = निष्कंटक

6. यदि विसर्ग के पश्चात् र आया हो तो पहले आया हुआ ह्रस्व स्वर दीर्घ हो जाता है। जैसे –
निः + आरा रोग = नीरोग
निः + रस = नीरस

7. यदि विसर्ग के पश्चात् स्वर या सघोष व्यंजन आये हो तो विसर्ग र में बदल जाता है। जैसे-
निः + आशा = निराशा
निः + अपराध = निरपराध

समास

जब आपस मे सम्बन्ध रखने वाले दो या दो से अधिक शब्दो को मिलाकर शब्द बनाते है, तो इस प्रक्रिया को समाज कहते है।

समासिक शब्द ⇒ समाज के नियमो से बने हुए शब्द को समासिक शब्द कहते है। इसे 'समस्त पद' भी कहते है।

समाज विग्रह –
समाजिक शब्दों की बीच के सम्बन्ध को स्पष्ट करना, समाज विग्रह कहलाता है।
जैसे – राम और लक्ष्मण; यह राम लक्ष्मण समस्त के छः भेद है –

1. तत्पुरुष समास
2. अव्ययीभाव समास
3. कर्मधारय समास
4. द्विगु समास
5. द्वंद समास
6. बहुव्रीहि समास

UNITED SECULAR SOCIETY

Scanned with CamScanner

अ

Topic .... Date ....

1. तत्पुरुष समास→ जिस समास में दूसरा शब्द प्रधान होता है, उसे तत्पुरुष समास कहते है, जैसे-
राजा का महल = राजमहल

2. अव्ययीभाव समास→ जिस समस्त पद में पहला पद प्रधान हो, उसे अव्ययीभाव समास कहते हैं इस समास में पहला पद अव्यय होता है तथा समस्त पद होने पर सारा शब्द भी अव्यय बन जाता है जैसे-

प्रतिदिन	दिन-दिन
आजन्म	जन्म-भर

3. कर्मधारय समास- जिन समस्त पद के दोनों पदों में विशेषण विशेष्य अथवा उपमेय - उपमान सम्बन्ध होता है उसे कर्मधारय समास कहते हैं।

समस्त-पद	विग्रह
कृष्ण सर्प	काला है जो सर्प
नील कंठ	नीला है जो कंठ

4. द्विगु समास- जिस समस्त-पद में पहला पद संख्यावाचक विशेषण हो तथा समस्त-पद किसी समूह या समुदाय का बोध कराए, उसे द्विगु समास कहते हैं

समस्त-पद	विग्रह
त्रिफला	तीन फलों का समूह
नवरत्न	नौ रत्नों का समूह

5. द्वंद समास - जिस समस्त पद में दोनों पद प्रधान होते है तथा विग्रह करने पर 'और', 'तथा', 'अथवा' आदि लगता है। वहाँ द्वंद समास होता है

समस्त पद	विग्रह
सुख-दुख	सुख और दुख
माता-पिता	माता और पिता

6. बहुव्रीहि समास- जिस समस्त पद में कोई भी पद प्रधान नहीं होता, बल्कि समस्त-पद किसी अन्य पद का बोध कराता है, वही पद प्रधान होता है।

UNITED SECULAR SOCIETY

Scanned with CamScanner

Topic.. Date..........................

वहाँ बहुव्रीहि समास होता है।

समस्त-पद	विग्रह
नील कंठ	नीला है कंठ जिसका अर्थात शिव
चतुर्भुज	चार हैं भुजाएं जिसकी अर्थात विष्णु

उपसर्ग

उपसर्ग उन शब्दांशों को कहते हैं जो किसी शब्द के पहले लगाकर उसके अर्थ को थोड़ा परिवर्तित कर देते हैं।

1. हिन्दी उपसर्ग

उपसर्ग	अर्थ	शब्द
अ	नहीं	अथाह, अजान, अगाध, ~~अनबन~~ अलख।
अन	नहीं	अनपढ़, अनगढ़, अनसुना, अनबन।
अध	आधा	अधमरा, अधपका, अधलिखा, अधजल।
उन	एक कम	उनतीस, उनतालीस, उनचास।
क, कु	बुरा	कपूत, कुराज, कुचाल, कुदेव।
स	साथ	सह-अस्तित्ववाद, सपूत, सजग, सगुण।
सु	अच्छा	सुघड़, सुजान, सुफल, सुपात्र।

2. संस्कृत उपसर्ग

उपसर्ग	अर्थ	शब्द
अति	बहुत	अतिरिक्त, अतिवृष्टि, अतिशय, अतिक्रम
अधि	ऊपर	अधिकार, अधिभार, अधिगुण, अधिराज
अनु	पीछे	अनुकरण, अनुसरण, अनुगमन, अनुराग
अप	बुरा	अपवाद, अपमान, अपशब्द, अपहरण
अभि	सामने	अभिमान, अभिशाप, अभिलाषा, अभिसार

3. अरबी-फारसी उपसर्ग

उपसर्ग	अर्थ	शब्द
कम	~~कमतर~~ रहित कम	कमजोर, कमसमझ, कम, अक्ल।
गैर	~~बुरा~~ रहित	गैर-सरकारी, गैर-जरूरी, गैरहाजिर
बद	बुरा	बदशक्ल, बदनीयत, बदइमानी, बदनाम
बिला	बिना	बिलावजह, बिलाशक, बिलाशर्त।

UNITED SECULAR SOCIETY

Topic .... Date ....

प्रत्यय

प्रत्यय उन शब्दांशों को कहते हैं, जो किसी शब्द के बाद में जुड़कर उसके अर्थ में परिवर्तन कर देते हैं।
जैसे- मधुर + ता = मधुरता ।

प्रत्यय के भेद

प्रत्यय दो प्रकार के होते हैं - कृत् प्रत्यय और तद्धित प्रत्यय ।

1. कृत प्रत्यय - जो प्रत्यय क्रिया की धातु के साथ जुड़ते हैं। उन्हें कृत प्रत्यय कहते हैं। जैसे- शिक्ष (धातु) + अक = शिक्षक ।
2. तद्धित प्रत्यय - जो प्रत्यय क्रिया से भिन्न शब्द (संज्ञा, सर्वनाम आदि) से जुड़ते हैं, उन्हें तद्धित प्रत्यय कहते हैं ।

संस्कृत प्रत्यय

अन - गायन, शमन, दमन, पालन, साधन, मोहन ।
अना - रचना, घटना, सूचना ।
आ - इच्छा, पूजा, चिन्ता, शिक्षा, बाला, प्रिया ।
इमा - गरिमा, महिमा, रक्तिमा, अरुणिमा ।
अक - शिक्षक, नायक, लेखक, पाठक, दर्शक, अध्यापक ।
त्व - गुरुत्व, लघुत्व, पुरुषत्व, बन्धुत्व, वीरत्व ।
इका - शिक्षिका, गायिका, लेखिका, पाठिका, अध्यापिका ।

हिन्दी प्रत्यय

आका - धमाका, लड़का, गुड़ाका, धड़ाका ।
आई - मिठाई, बुराई, चढ़ाई, भलाई, कमाई, ऊँचाई ।
आपा - बुढ़ापा, रंडापा
आस - मिठास, खटास, दुपास । आकू - पढाकू, लड़ाकू ।

अरबी-फारसी प्रत्यय

खाना - डाकखाना, बैलखाना, कैदखाना।
कार - जानकार, पेशकार, पच्चीकार, गीतकार ।
दान - पीकदान, पानदान, फूलदान, पायदान, चौरागदान
दानी - चायदानी, मच्छरदानी, अचारदानी।

संज्ञा

श्रीमती शर्मा

श्री गुप्ता

गीता

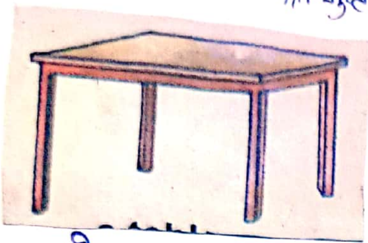

मेज

पुस्तक

वस्तु

शेर

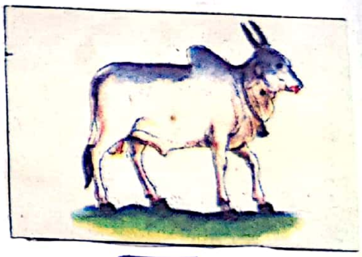

गाय

लाल किला

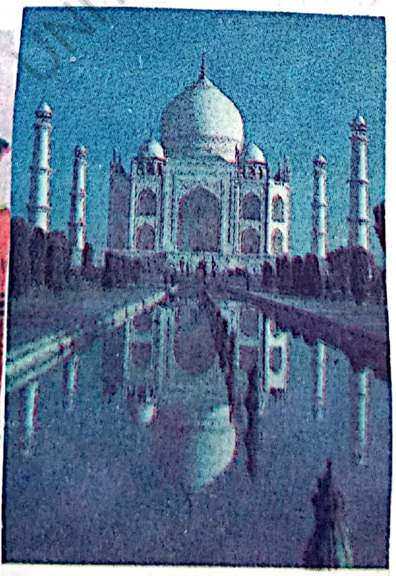

ताजमहल

ताज महल

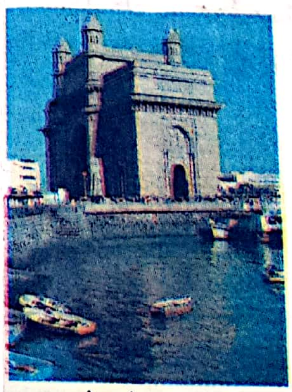

गेट वे आफ इण्डिया

इंडिया गेट

UNITED SECULAR SOCIETY

Scanned with CamScanner

Topic............ Date............

रूप विचार

जब शब्द वाक्यों में प्रयुक्त होते हैं तो उन्हें 'पद' कहते हैं। अतः रूप-विचार को 'पद-विचार' भी कहा जाता है। इसके अन्तर्गत शब्दों के प्रयोग पर विचार किया जाता है।

संज्ञा

किसी प्राणी, व्यक्ति, वस्तु, अवस्था, स्थान, गुण, भाव, कर्म आदि के नाम को संज्ञा कहते हैं। जैसे - लखनऊ, मेज, मोहन, कोमलता आदि।

संज्ञा के भेद

संज्ञा के भेद निम्नलिखित तीन होते हैं।

1. व्यक्तिवाचक संज्ञा
2. जातिवाचक संज्ञा
3. भाववाचक संज्ञा
4. समूहवाचक संज्ञा
5. द्रव्यवाचक संज्ञा

1. व्यक्तिवाचक संज्ञा → जिन संज्ञा शब्दों से किसी विशेष व्यक्ति, वस्तु या स्थान का बोध होता है, उन्हें व्यक्तिवाचक संज्ञा कहते हैं। जैसे - आगरा, मोहन, गंगा, ताजमहल आदि।

2. जातिवाचक संज्ञा - जिन शब्दों संज्ञा शब्दों से एक ही प्रकार की सभी वस्तुओं या प्राणियों का बोध होता है, उन्हें जातिवाचक संज्ञा कहते हैं। जैसे - कुत्ता, बिल्ली, गाँव, पशु, नगर आदि।

3. भाववाचक संज्ञा - जिन संज्ञा शब्दों से अवस्था, गुण या कार्य का बोध होता है, उन्हें भाववाचक संज्ञा कहते हैं। जैसे - अच्छाई, बचपन, पढ़ाई, चढ़ाई, वीरता आदि।

4. समूहवाचक संज्ञा - जिस संज्ञा शब्द से अनेक वस्तुओं या प्राणियों के समूह का बोध होता है, उसे समूहवाचक संज्ञा कहते हैं।
जैसे - कक्षा, सेना, सभा, परिवार, गोष्ठी आदि।

UNITED SECULAR SOCIETY

Scanned with CamScanner

Topic..Date................................

द्रव्यवाचक संज्ञा– जिन संज्ञा शब्द से ऐसे पदार्थों का बोध होता है, जिसका परिणाम तो जाना जा सकता है, किन्तु उनकी गिनती नहीं की जा सकती, उसे द्रव्य-वाचक संज्ञा कहते हैं।
जैसे- सोना, चाँदी, लोहा, ताँबा, हवा, घी, दूध आदि।

सर्वनाम

संज्ञा के स्थान पर प्रयोग किये जाने वाले शब्दों को सर्वनाम कहते हैं।
जैसे:- मैं, तुम, हम, वह आदि।

सर्वनाम के भेद

सर्वनाम के छह भेद होते हैं।

(1) पुरुषवाचक सर्वनाम (2) निश्चयवाचक सर्वनाम
(3) अनिश्चय वाचक सर्वनाम (4) सम्बन्धवाचक सर्वनाम
(5) प्रश्नवाचक सर्वनाम (6) निजवाचक सर्वनाम

1. पुरुषवाचक सर्वनाम – जो शब्द वाक्य में बोलने वाले सुननेवाले और किसी दूसरे स्त्री-पुरुष या प्राणी का बोध कराते हैं, उन्हें पुरुषवाचक सर्वनाम कहते हैं। जैसे:-(i) राम ने कहा कि तुम कब आओगे।
पुरुषवाचक, सर्वनाम के पुरुष निम्नलिखित तीन प्रकार के होते हैं।

(1) उत्तम पुरुष
(2) मध्यम पुरुष
(3) अन्य पुरुष

(1) उत्तम पुरुष :- बात कहने वाले के लिए प्रयुक्त होने वाले सर्वनाम को उत्तम पुरुष कहते हैं।
जैसे- मैं, हम, मुझे, हमें, हमको, मुझको।

(ii) मध्यम पुरुष :- बात सुननेवालों के लिए प्रयुक्त होने वाले सर्वनाम को मध्यम पुरुष कहते हैं।
जैसे – तुम, तुम्हें, तुमको आदि।

UNITED SECULAR SOCIETY

CRYSTAL Designer Sheet
Teacher's Signature
Scanned with CamScanner

Topic .... Date ....

(iii) अन्य पुरुष – जिस व्यक्ति, प्राणी अथवा प्रथ पदार्थ के विषय में बातचीत चल रही है, उसके लिए प्रयुक्त विषय होने वाले सर्वनाम अन्य पुरुष कहलाते हैं। जैसे – वह, उन्हें, उसे, वे आदि

2. निश्चयवाचक सर्वनाम – जो सर्वनाम निकट या दूर की किसी निश्चित वस्तु अथवा व्यक्ति की ओर संकेत करता है उसे निश्चयवाचक सर्वनाम कहते हैं। जैसे – मुझे यह पसंद है, वह नहीं

3. अनिश्चयवाचक सर्वनाम – जिन सर्वनामों से किसी निश्चित वस्तु अथवा व्यक्ति का बोध नहीं होता, उन्हें अनिश्चयवाचक सर्वनाम कहते हैं, जैसे – कोई आ रहा है।

4. सम्बन्धवाचक सर्वनाम – जो सर्वनाम किसी वाक्य के एक उपवाक्य में आये हुए किसी संज्ञा या सर्वनाम का दूसरे दूसरे उपवाक्य से सम्बन्ध बताता है, उसे सम्बन्धवाचक सर्वनाम कहलाते हैं। जैसे – वह कलम मुझे मिल गया ~~था~~ है, जो तुमने खो दिया था।

5. प्रश्नवाचक सर्वनाम – जो सर्वनाम प्रश्न पूछने के लिए प्रयुक्त होते हैं, उन्हें प्रश्नवाचक सर्वनाम कहते हैं। जैसे – कौन आ रहा है।

6. निजवाचक सर्वनाम – जिन सर्वनामों को प्रयोग कर्ता अपने लिए 'स्वयं' के अर्थ में करता है, उन्हें निजवाचक सर्वनाम कहते हैं। जैसे – मैंने यह काम स्वयं किया है।

विशेषण

जो शब्द संज्ञा या सर्वनाम की विशेषता बताते हैं, उन्हें विशेषण उन्हें विशेषण कहते हैं। जैसे – वह अच्छा आदमी है।

विशेषण के भेद

विशेषण के पाँच भेद होते हैं –

(1) गुणवाचक भेद विशेषण
2. परिमाणवाचक विशेषण
3. संख्यावाचक विशेषण
4. सार्वनामिक विशेषण
5 व्यक्तिवाचक विशेषण

UNITED SECULAR SOCIETY

Scanned with CamScanner

विश्लेषण

यह आदमी मोटा है

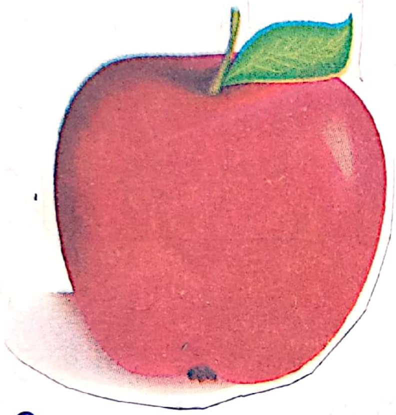

सेब मीठा है

चाय गर्म है

UNITED SECULAR SOCIETY

कौआ काला होता है

Scanned with CamScanner

Topic............ Date............

1. गुणवाचक विशेषण - जो शब्द किसी संज्ञा या सर्वनाम के गुण, दोष, रंग, आकार, और दशा का बोध कराते हैं, उन्हें गुणवाचक विशेषण कहते हैं। जैसे- वह मोटा आदमी है।

2. परिणाम वाचक विशेषण - जो शब्द किसी वस्तु की संज्ञा मात्रा नाप या तौल बताते है, उन्हें परिणामवाचक विशेषण कहते हैं जैसे- मुझे थोड़ा तेल दो।

3. संख्यावाचक विशेषण - जिन विशेषणों से संख्याओं का बोध होता है, उन्हें संख्यावाचक विशेषण कहते हैं।
जैसे- मेरे पास दो घोड़े हैं।

4. सार्वनामिक विशेषण - जो विशेषण सर्वनाम शब्दों से बनाये जाते हैं, उन्हें सार्वनामिक विशेषण कहते हैं। ये शब्द सर्वनाम भी होते हैं, किन्तु इनके पश्चात् संज्ञा का प्रयोग होने पर ये सार्वनामिक बन जाते हैं।
जैसे- वह लड़का पढ़ता है।

विशेषण की अवस्थाएँ

तुलना को व्यक्त करने करने के लिए विशेषण की तीन अवस्थाएँ होती हैं, जो निम्न प्रकार हैं -

(i) मूलावस्था (ii) उत्तरावस्था (iii) उत्तमावस्था।

1. मूलावस्था - यह विशेषण की मूल रूप होता है। इनमे किसी से तुलना नहीं की जाती है।
जैसे- वह अच्छा लड़का है।

2. उत्तरावस्था - यह विशेषण का वह रूप होता है जो दो विशेष्यों की विशेषताओं की तुलना करता है।
जैसे - वह तुमसे अधिक अच्छा है

3. उत्तमावस्था ⇒ यह विशेषण का वह रूप है जो एक विशेष्य को अन्य सभी की तुलना मे बढ़कर बताते है।
जैसे - वह सबसे अच्छा लड़का है।

Scanned with CamScanner

हँसना

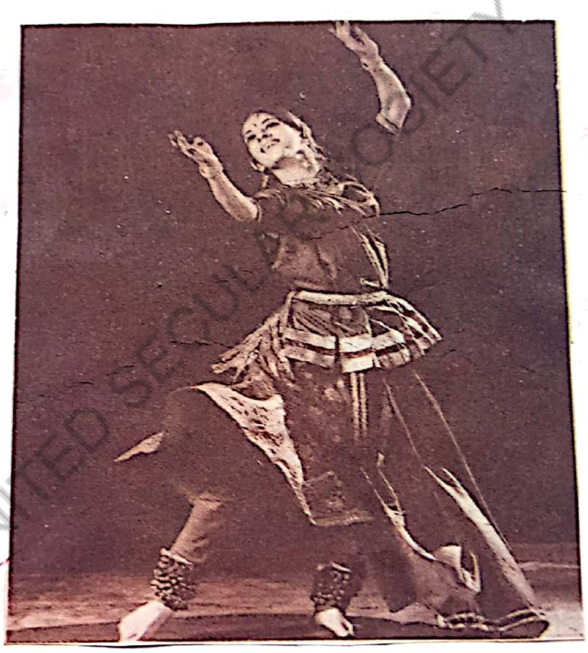

UNITED SECULAR SOCIETY

नाचना

Scanned with CamScanner

Topic............ Date............

क्रिया

1. जिस शब्द से किसी कार्य का करना या होना प्रकट होता है, क्रिया कहते है। जैसे- वह खाना खाता है।

क्रिया का मूल रूप 'धातु' कहलाता है। जैसे- 'खा' मूल धातु है। 'ना' प्रत्यय लगाने से 'खाना' क्रिया का सामान्य रूप हो गया। इस प्रकार धातु मे 'ना' प्रत्यय के योग से क्रिया का सामान्य रूप बनाया जाता है। जैसे- बैठ + ना (बैठना), सो + ना (सोना) आदि।

कर्म के आधार पर क्रिया के दो भेद होते है।

1 अकर्मक क्रिया 2. सकर्मक क्रिया

1. अकर्मक क्रिया- जिस क्रिया के साथ किसी कर्म की आवश्यकता नही होती, उसे अकर्मक क्रिया कहते है। जैसे- वह घर जाता है।

2. सकर्मक क्रिया- जिन क्रियाओं के साथ किसी कर्म की आवश्यकता नही होती है, उसे सकर्मक क्रिया कहते है। जैसे- मोहन पुस्तक पढता है। (कर्म + पुस्तक)

संरचना की दृष्टि से क्रिया के भेद

1. संयुक्त क्रिया 2. नामधातु क्रिया 3. प्रेरणार्थक क्रिया 4. कृदन्त क्रिया

1 संयुक्त क्रियाऐ- जो क्रिया किसी क्रिया अथवा संज्ञा, विशेषण, क्रिया विशेषण आदि शब्दो के साथ दूसरी क्रिया का योग बनाती हैं, उन्हें संयुक्त क्रियाएँ कहते हैं।

1 आज आकाश में चाँद दिखाई दिखाई दिया।

2. नामधातु क्रिया — संज्ञा, सर्वनाम और विशेषण से बनने वाली क्रियाएँ नामधातु कहलाती है।

1. वह मुझसे लजाता है।

3. प्रेरणार्थक क्रिया- जब कर्ता स्वयं कार्य न करके किसी दूसरे से करवाता है तो उस क्रिया को प्रेरणार्थक क्रिया कहते है। जैसे- गीता ने स्वेता से पत्र लिखवाया।

UNITED SECULAR SOCIETY

CRYSTAL Designer Sheet

Teacher's Signature............

Scanned with CamScanner

५६

स्त्रीलिंग

लड़की

पुल्लिंग

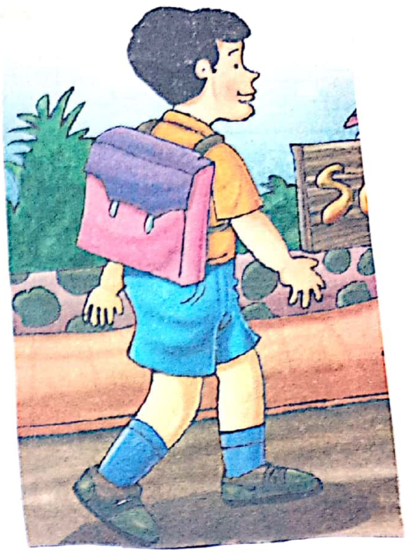

लड़का

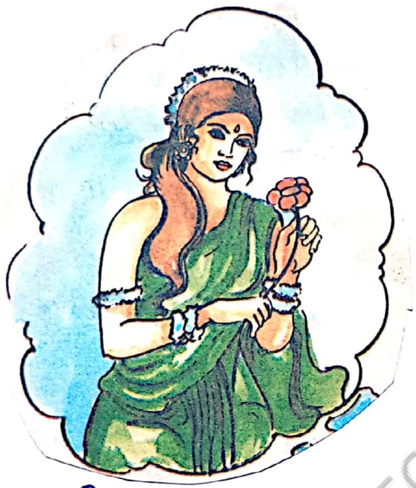

औरत

आदमी

UNITED SECULAR SOCIETY

एक वचन

बहुवचन

Scanned with CamScanner

कृदन्त क्रिया— जब किसी वाक्य में एक क्रिया के समाप्त हो जाने के पश्चात् दूसरी क्रिया आरम्भ होती है, तो पहले समाप्त हो चुकी क्रिया को पूर्वकालिक क्रिया कहते हैं। वह खाना खाकर गया।

लिंग

शब्द के जिस रूप से यह पता चलता है कि वह शब्द पुरुष जाति के लिए प्रयुक्त हुआ है अथवा स्त्री जाति के लिए, उसे लिंग कहते हैं।

जैसे- मोहन, लड़का, कुत्ता, राजा आदि।
मोहनी, लड़की, कुतिया, रानी आदि।

लिंग के दो भेद

1. पुल्लिंग 2. स्त्रीलिंग

सभी तरह की भाषा संज्ञाएँ चाहे वे निर्जीव पदार्थों के नाम भी हो, या तो पुल्लिंग होती है या स्त्रीलिंग।

1. पुल्लिंग— शब्द के जिस रूप मे पुरुष जाति का बोध होता है उसे ~~स्त्रीलिंग~~ पुल्लिंग कहते हैं। जैसे- चुहा, मोर, माली, घोड़ा, चाचा आदि।

2. स्त्रीलिंग— शब्द के जिस रूप से स्त्री जाति का बोध होता है, उसे स्त्रीलिंग कहते है। जैसे- चुहिया, मोरनी, मालिन, घोड़ी, चाची आदि।

वचन

जिस शब्द से संख्या का बोध होता है, उसे वचन कहते है।

वचन के भेद

वचन के निम्नलिखित दो भेद होते हैं।

1- एकवचन 2 बहुवचन

1- एकवचन—शब्द के जिस रूप मे एक व्यक्ति या वस्तु का बोध होता है। वह शब्द एकवचन मे होता है। जैसे—लड़का, बेटा, पुस्तक माला आदि।

2- बहुवचन—शब्द के जिस रूप से अधिक व्यक्ति या वस्तु का बोध होता है, वह शब्द ~~एकवचन~~ बहुवचन में होता है। जैसे—पुस्तकें बेटे मालाएं आदि

२६

वर्तमान काल

सीता पुस्तक पढ़ रही है

रवी पत्र लिख रहा है

भूतकाल

मोहन खाना खायेगा।

भविष्य

UNITED SECULAR SOCIETY

Scanned with CamScanner

Topic........................ Date........................

काल

क्रिया के रूप से कार्य के करने या होने के समय का पता चलता है। इस समय को ही काल कहते हैं। जैसे-
1. वह पढ़ रहा है। (2) वह पढ़ रहा था। 3. वह पढ़ रहा होगा।

काल के भेद

काल के मुख्य रूप से तीन भेद होते हैं।
(1) वर्तमानकाल
(2) भूतकाल
(3) भविष्यत्‌काल

वर्तमानकाल - जो समय अब चल रहा है। उसे वर्तमान काल कहते हैं। इस काल की क्रियाओं के साथ है, हैं, हूँ जुड़े रहते हैं।
जैसे- मैं प्रतिदिन विद्यालय जाता हूँ।

भूतकाल - जो समय बीत चुका, उसे भूतकाल कहते हैं। इस काल की मुख्य क्रिया में आ, ई, ए जुड़े रहते हैं।
जैसे- मैंने आपका पत्र पढ़ा।
था, थी, थे का प्रयोग केवल भूतकाल में ही होता है। अन्य किसी काल में नहीं।

भविष्यकाल - जो समय आगे आने वाला है, उसे भविष्यत्‌काल कहते हैं। इस काल के वाक्यों की मुख्य क्रिया में गा, गी, गे, जुड़े रहते हैं। जैसे- वह आज मेरठ जाएगा।

भूतकाल	भविष्यत्‌काल	वर्तमान काल
भूतकाल के नियम छः भेद हैं -	भविष्यत्‌काल के दो भेद होते हैं।	वर्तमान काल के निम्न लिखित तीन भेद होते
1 सामान्य भूत	1. सामान्यभविष्यकाल	1. सामान्य वर्तमान
2 आसन्न भूत	2 सम्भाव्य भविष्यत-	2. अपूर्ण वर्तमान
3 अपूर्ण भूत		3. संदिग्ध वर्तमान
4 पूर्ण भूत		
5 संदिग्ध भूत		
6 हेतुहेतुमद् भूत		

UNITED SECULAR SOCIETY

58

क्रिया विशेषण

रमन बहुत खाता

घोड़ा तेज दौड़ता है

सोहन अच्छा खेलता है

शशांक कम बोलता है

UNITED SECULAR SOCIETY

Scanned with CamScanner

Topic.................... Date....................

क्रिया विशेषण

जो शब्द क्रिया या क्रिया विशेषण की विशेषता बताते है उन्हे क्रिया विशेषण कहते हैं।

उदा० - तुम धीरे चलते हो।

क्रिया विशेषण के भेद

क्रिया विशेषण के निम्नलिखित चार भेद होते है।

1. स्थानवाचक क्रिया विशेषण
2. कालवाचक क्रिया विशेषण
3. परिमाणवाचक क्रिया विशेषण
4. रीतिवाचक क्रिया विशेषण

वाक्य - विचार

जिस शब्द या शब्द - समूह से पूरी बात समझ मे आ जाए उसे वाक्य कहते है। जैसे - (i) बैठो। (ii) इधर आओ।

वाक्य के दो खण्ड होते है। -

① उद्देश्य ② विधेय

① उद्देश्य - वाक्य में जिसके विषय में कुछ कहा जाता है उसे उद्देश्य कहते है।

② विधेय - वाक्य में उद्देश्य के सम्बन्ध मे जो कुछ कहा जाता है, उसे विधेय कहते है।

उद्देश्य	विधेय
मेरा घोडा	तेज दौडता है।
मैं	दसवी कक्षा मे पढता हू।

विराम - चिन्ह

वाक्य के अर्थ को स्पष्ट करने के लिए जो चिन्ह लगाये जाते है, उन्हे विराम - चिन्ह कहते है जैसे - ठहरो मत जाओ।

दोनो उदाहरणो के प्रत्येक वाक्य का अर्थ अलग है यहां पर ठहरने को कहा गया है तथा दूसरे वाक्य में ठहरने से रोका गया है, और जाने को कहा गया है। यह अर्थान्तर केवल अल्प विराम के कारण हो गया है -

UNITED SECULAR SOCIETY
Scanned with CamScanner

लिखाई में प्रयोग किए जाने वाले प्रमुख विराम-चिन्ह निम्नवत हैं

	विराम-चिन्ह के नाम	चिन्ह
1.	पूर्ण विराम	।
2.	अल्प विराम	,
3.	अर्ध विराम	;
4.	प्रश्नसूचक चिन्ह	?
5.	विस्मयबोधक चिह्न	!
6.	उद्धरण चिह्न	“ ”
7.	योजक चिह्न	-
8.	विवरण चिह्न	:—
9.	निर्देश चिह्न	—
10.	कोष्ठक	( ), { }, [ ]

1. पूर्ण विराम– इस चिन्ह का प्रयोग वाक्य के समाप्त होने पर किया जाता है। जैसे– वह घर चला गया।

2. अल्पविराम– इस विराम चिह्न का प्रयोग उन स्थानों पर किया जाता है, जहाँ बात तो पूरी नहीं होती किन्तु अर्थ को स्पष्ट करने के लिए थोड़ा रुकना आवश्यक हो। जैसे– खाओ, पिओ और मौज करो

3. अर्ध विराम– जब दो वाक्यों के बीच अल्प विराम लगाने से भ्रान्ति की सम्भावना हो, तब अर्ध विराम का प्रयोग करते हैं। जैसे– जो मन आये, करो; बस, हमें अकेला छोड़ दो।

4. प्रश्नवाचक चिह्न= जहाँ सीधे-सीधे प्रश्न किया जाता है, वहाँ वाक्य के अन्त में प्रश्नसूचक चिह्न लगाते हैं। जैसे– तुम्हारा भाई कहाँ है ?

5. विस्मयादिबोध चिह्न– जिन वाक्यों में हर्ष, शोक, घृणा और आश्चर्य प्रकट हो, उनके अन्त में विस्मयादिबोधक चिह्न लगाया जाता है। जैसे– अरे! तुमने कमाल कर दिया।

6. उद्धरण चिह्न– जब किसी के कथन को ज्यों का त्यों उद्धृत किया जाये तो उस कथन को उद्धरण चिन्हों के अन्तर्गत रखते हैं। जैसे– नेताजी ने कहा था।

7. योजक चिह्न → दो शब्दों को जोड़ने के लिए योजक चिह्न चिन्ह का प्रयोग किया जाता है। जैसे- माता-पिता, राजा-रानी, नर-नारी आदि।

8. विवरण चिह्न- जब किसी वाक्य के पश्चात् किसी प्रकार का विवरण देना हो तो वहाँ विवरण चिह्न का

9. निर्देश चिह्न-
किसी बात पर विशेष प्रकाश डालने के लिए जब स्पष्टीकरण देना हो तो संवादों के नामों के आगे, निर्देश चिह्न का प्रयोग किया जाता है।
जैसे- द्वारपाल - (सिर झुकाकर) राजन! संवाददाता आना चाहता है।

10. कोष्ठक =
जब किसी वाक्यांश के अर्थ या भाव को स्पष्ट करने की आवश्यकता हो, तब कोष्ठक का प्रयोग किया जाता है।
जैसे- आज सोहन (मेरा छोटा भाई) मुझसे नाराज चल रहा है।

UNITED SECULAR SOCIETY

Scanned with CamScanner

57

Topic: Date:

रचना

पत्र - लेखन

दूर दूर रहने वाले सम्बन्धियों, मित्रों, परिचितों और कभी-कभी अपरिचितों तक सन्देश भेजने अथवा उनका कुशल-क्षेम जानने के लिए पत्रों का सहारा लिया जाता है।

पत्र मुख्यत: तीन प्रकार के होते हैं -

1. व्यक्तिगत पत्र - ऐसे पत्र अपने अपने व्यक्तिगत सम्बन्धों में लिखे जाते हैं। इन पत्रों में निजी सम्बन्धों, व्यक्तिगत विचारों और पारस्परिक व्यवहारः का उल्लेख रहता है।

2. प्रशासनिक पत्र - ऐसे पत्र विद्यालय के प्रधानाचार्यों सरकारी कार्यालयों या अन्य कार्यालयों को लिखे जाते हैं।

इन पत्रों में अनावश्यक शब्दावली का प्रयोग नहीं किया जाता है।

3. व्यापारिक पत्र - इन पत्रों में व्यापार सम्बन्धी बातें रहती हैं। पत्र माल मागने - भेजने, पिछला आदेश निरस्त करते हैं माल की गुणवत्ता की शिकायत करने आदि के सम्बन्ध में होते हैं -

1. पत्र भेजने वाले का पता
2. पत्र भेजने का दिनांक
3. पत्र पानेवाले के लिए उपयुक्त सम्बोधन एवं अभिवादन
4. समाचार या निवेदन
5. पत्र की समाप्ति पर गये शिष्टाचार पूर्ण शब्द
6. पत्र पाने वाले का नाम और पूरा पता।

Crystal Designer Sheet
Teacher's Signature
Scanned with CamScanner

58

स्वतन्त्रता दिवस

UNITED SECULAR SOCIETY

Scanned with CamScanner

स्वतन्त्रता दिवस

भारत एक विशाल देश है। विस्तृत भू-भाग में फैले हुए इस देश में अनेक सामाजिक और सांस्कृतिक पर्व मनाये जाते हैं, इन राष्ट्रीय पर्वों में 15 अगस्त का विशेष महत्व है। इस पर्व को हम सभी भारतवासी स्वतन्त्रता दिवस के रूप में विशेष उल्लास के साथ मनाते हैं।

15 अगस्त के दिन को हम स्वतन्त्रता-दिवस के रूप में मनाकर हम उन असंख्य वीरों के प्रति अपनी कृतज्ञता प्रकट करते हैं, जिनके निःस्वार्थ त्याग और बलिदान के परिणामस्वरूप हमें स्वतन्त्रता के मुक्त गगन में उड़ान भरने का सुअवसर प्राप्त हुआ।

15 अगस्त 1947 को भारत आजाद हुआ इस दिन से ही हम इसे स्वतन्त्रता दिवस के रूप में मनाते हैं इस दिन प्रधानमन्त्री लाल किले पर राष्ट्रीय ध्वज फहराते हैं। राष्ट्रीय झण्डा, स्कूल, कॉलिज तथा ऑफिसों में भी फहराया जाता है पूरा देश आनन्द के साथ मनाता है। इसके बाद राष्ट्रगीत गाया जाता है सभी को मिठाइयाँ बाँटी जाती हैं। यह दिन हमें अपने राष्ट्र के प्रति कर्तव्यों की याद दिलाता है। स्वतन्त्रता दिवस का राष्ट्र के प्रति जीवन में बड़ा महत्व है। हमें इस पवित्र दिन की महत्ता को सदैव स्मरण करते रहना चाहिए।

UNITED SECULAR SOCIETY

Scanned with CamScanner

Topic........ Date........

निबन्ध- रचना

किसी विषय पर क्रमबद्ध और व्यवस्थित रूप से लिखी गयी कलात्मक रचना को निबन्ध कहते है। इसे लिखते समय विद्यार्थी को निम्नलिखित बिन्दुओं पर ध्यान देना आवश्यक है-

1. निबन्ध लिखने से पूर्व सम्बन्धित विषय का सम्यक ज्ञान होना चाहिए।
2. निबन्ध लिखने से पूर्व उसकी रूप रेखा बना लेनी चाहिए और उसके अनुरूप एक अनुच्छेद में एक ही बिन्दु पर सिलसिलेवार विचार व्यक्त करने चाहिए।
3. निबन्ध में असंगत बातों या असम्बद्ध वाक्यों का प्रयोग नहीं करना चाहिए। कथ्य को प्रभावी बनाने के लिए अपने विचार सुव्यवस्थित ढंग से और तार्किक भाषा मे व्यक्त करने चाहिए।
4. निबन्ध की भाषा सरल, सुबोध और प्रभावोत्पादक होनी चाहिए।
5. उपयुक्त विराम-चिन्हों का प्रयोग यथास्थान करना चाहिए।
6. अपने मत के समर्थन मे उपयुक्त उद्धरणों और अन्य व्यक्तियों का प्रयोग करने से निबन्ध की बोधकता और प्रभावोत्पादकता मे वृद्धि होती है, अतः उपयुक्त स्थान पर इनका प्रयोग भी करना चाहिए।

7. इनका प्रयोग भी

7. निबन्ध एक निश्चित सीमा मे रहना चाहिए। और अनावश्यक विस्तार देने का प्रयास नही करना चाहिए।

UNITED SECULAR SOCIETY

CRYSTAL Designer Sheet

Teacher's Signature........

Scanned with CamScanner

(62)

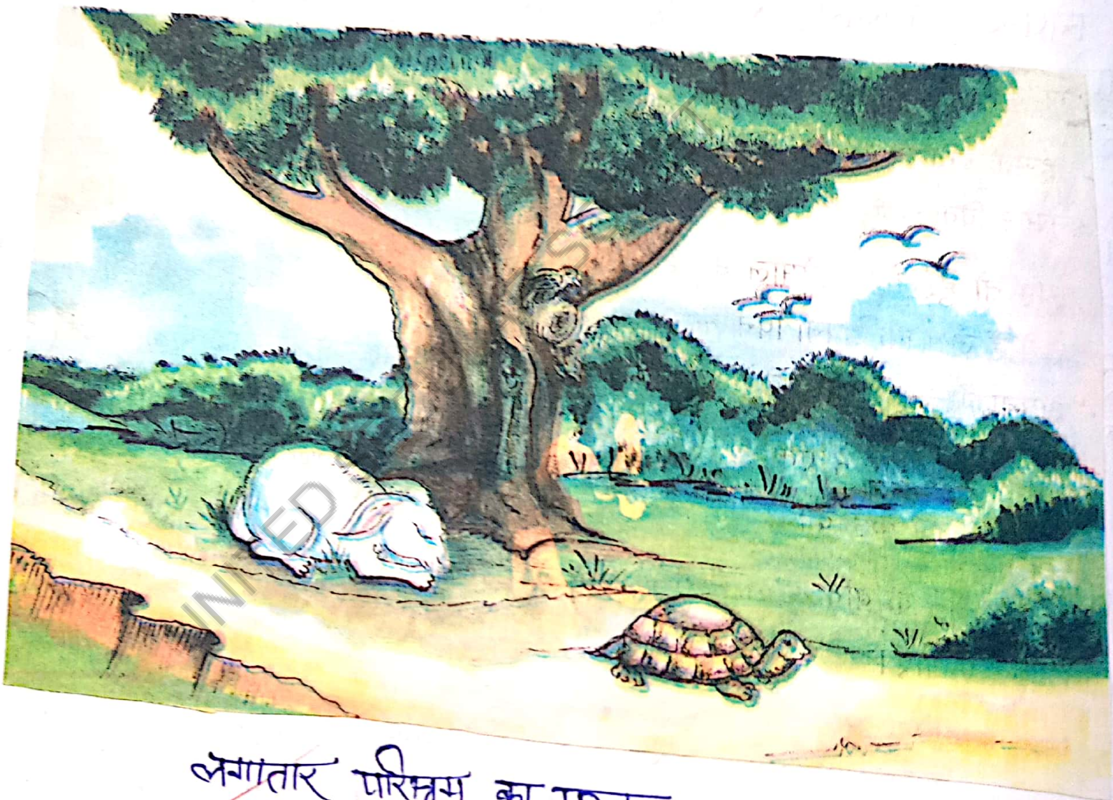

लगातार परिश्रम का फल

कहानी-रचना

कहानी पढ़ना सबको अच्छा लगता है। विशेष रूप से बच्चों को तो कहानी बहुत ही प्रिय होती है। कहानी में मनुष्यों, पक्षी, पशु आदि का जीवन वर्णन होता है। इन्हें कहानी के पात्र कहा जाता है। ये पात्र आपस में बातचीत करते हैं, इन्हें कहानी के संवाद या कथोपकथन कहते हैं। कहानी में पात्रों के सुख-दुख का वर्णन होता है, उसे कहानी का उद्देश्य कोई न कोई प्रयोजन होता है, इस प्रकार कहानी के मुख्य रूप से चार अंग होते हैं कथावस्तु, पात्र, कथोपकथन और उद्देश्य।

कहानी की रचना दो प्रकार से सकती है-

चित्रों की सहायता से कहानी-रचना।

संकेतों की सहायता से कहानी-रचना।

लगातार परिश्रम का फल

एक बार खरगोश और कछुए की दौड़ हुई। खरगोश तेज दौड़ रहा था। कछुआ धीरे-धीरे चला। कुछ देर में कछुए और खरगोश में बहुत अंतर हो गया है। कछुआ हाँफकर चल रहा था। खरगोश ने सोचा क्यों ना थोड़ा आराम कर लिया। कछुआ तब तक आ भी न पाएगा। मै फिर उससे आगे निकल जाऊँगा। ऐसा सोचकर ऐसा सोचकर खरगोश आराम करने लगा। थोड़ी ही देर में खरगोश को नींद आ गई। कछुआ निरन्तर चलता ही रहा। खरगोश की आँखे खुली तो उसने देखा कि कछुआ उससे काफी आगे निकल गया था खरगोश बहुत तेज दौड़ा, लेकिन अब तक देर हो चुकी थी। कछुआ दौड़ जीत चुका था।